

23

वर्ष : 2019-20

ISSN : 0976-5778

ईसुरी

बुन्देलखण्ड के आधुनिक साहित्यकारों पर केन्द्रित



विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा नामित शोध पत्रिका- संख्या : 48672

ईसुरी-23

(पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका)

वर्ष - 2020 ISSN : 0976-5778

प्रधान संपादक

चन्दा बेन

संपादक

राजेन्द्र यादव

(सचिव बुन्देली पीठ)

प्रबंध संपादक

आशुतोष कुमार मिश्र



प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,

सागर (म.प्र.)

ईसुरी-23

वर्ष - 2020 अंक - 23 ISSN : 0976-5778

संरक्षक

प्रो. आर.पी. तिवारी

कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

कर्मल राकेश मोहन जोशी

कुलसचिव, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

संस्थापक संपादक

प्रो. कान्तिकुमार जैन

परामर्शदाता

प्रो. बी.आई. गुरु

प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

प्रधान संपादक

प्रो. चन्दा बेन

संपादक

डॉ. राजेन्द्र यादव

(सचिव, बुन्देली पीठ)

प्रबंध संपादक

डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

आवरण छाया : उमेश यादव (सैकड़ों वर्ष प्राचीन कल्प वृक्ष, ओरछा म.प्र.)

प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

संपादक मण्डल

प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

डॉ. हिमांशु कुमार

डॉ. अरविन्द कुमार

डॉ. अफरोज बेगम

डॉ. विवेकानन्द उपाध्याय

डॉ. मनीष कुमार

सत्यप्रकाश उपाध्याय

संतोष सोहगोरा

सतीष कुमार

विवेक विसारिया

अनुक्रम

प्रधान संपादक की कलम से...	- प्रो. चन्दा बेन	3
संपादकीय	- डॉ. राजेन्द्र यादव	5

बुन्देलखण्ड : कृति केन्द्रित मूल्यांकन

1. बुन्देली का सांस्कृतिक नाट्य उत्कर्ष (संदर्भ लोकनाथ सिलाकारी का राजा हरदौल बुन्देला)	- प्रो. राजमति दिवाकर	9
2. बुन्देली का रामभक्ति काव्य (संदर्भ भगवानदीन मिश्र का राजेन्द्र विलास महाकाव्य)	- प्रो. सुरेश आचार्य	12
3. बुन्देलखण्ड के रससिक्त अध्येता (संदर्भ हरिविष्णु अवस्थी का बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनाएँ)	- प्रो. चन्दा बेन	14
4. बुन्देलखण्ड की समृद्ध परंपरा : प्रबोध महाकाव्य (संदर्भ जगदीश कुमार कुशवाहा)	- प्रो. सरोज गुप्ता	18
5. बुन्देली भाषा का रसात्मक महाकाव्य (संदर्भ मायूस सागरी का ब्रजरज)	- प्रो. चन्दा बेन एवं सुधीर साहू	20
6. सद्यः सीरोत्कर्षण सुरभिः : बुन्देली के ललित निबंध (संदर्भ पद्मश्री कैलाश मड़बैया के निबन्ध)	- डॉ. आशुतोष	24
7. बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्तिकोष (संदर्भ आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल)	- डॉ. अफरोज बेगम	32
8. बुन्देली लोक का काव्यात्मक उछाह : ईसुरी (संदर्भ दया दीक्षित का फाग लोक के ईसुरी)	- डॉ. सुजाता मिश्र	36
9. बुन्देली लोक संस्कृति का सृजनात्मक वैभव (संदर्भ मोतीलाल चौरसिया : बुन्देली लोकगीतों के सांस्कृतिक अध्ययन)	- रतिराम अहिरवार	40

बुन्देलखण्ड : कृतिकार केन्द्रित मूल्यांकन

10. सागर जिले का साहित्यिक वैभव	- वृन्दावन राय 'सरल'	45
11. अम्बिका प्रसाद दिव्य की काव्य-साधना	- प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	49
12. लोकजीवन के चितरे कवि : अवधकिशोर जड़िया	- प्रो. बहादुर सिंह परमार	59
13. जयन्ति ते सुकृतिनो	- टीकाराम त्रिपाठी	66

बुन्देली भाषा का रसात्मक महाकाव्य (संदर्भ मायूस सागरी का ब्रजरज)

प्रो. चन्दा बेन एवं सुधीर साहू*

बुन्देली लोक साहित्य परम्परा में बख्शी हंसराज, ईसुरी, लालकवि आदि कवियों के साथ आधुनिक बुन्देली में मायूस सागरी एक ऐसा नाम है, जिन्हें उनके महाकाव्य 'ब्रजरज' के कारण बुन्देली का 'रसखान' कहा जाता है। एक पद्य में वे कहते भी हैं कि 'ने कइयो नादान, ने कइयो बे-दीन हैं। हम रहिमान, रसखान, खुसरों हैं रसलीन हैं।'¹

राधा-कृष्ण की भक्ति की रीतिकालीन परम्परा को आधुनिक बुन्देली में पुनर्नवा करने वाले मायूस सागरी बुन्देली के महाकवि के रूप में हमारे समय के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। इनका जन्म 1949 ई. में पुरव्याऊ टौरी सागर, मध्यप्रदेश में हुआ है। बचपन से ही लेखन में इनकी गहरी रुचि थी। इनकी पहली रचना का एक शेर सागर के स्वतंत्रता संग्राम सैनानी अब्दुल गनी साहिब के साप्ताहिक पत्र 'देहाती दुनिया' में प्रकाशित हुआ था - 'जिस नाव पर सवार था उम्मीद का हुजुम, उसके नसीब में कोई साहिल नहीं रहा।'²

मायूस सागरी हिन्दी, उर्दू और बुन्देली तीनों भाषाओं के सिद्धहस्त रचनाकार हैं। हिन्दी और उर्दू में उनकी अनेक रचनाएँ हैं। इन रचनाओं के साथ लोक में इनकी बुन्देली रचनाएँ खूब चर्चा में रही हैं। लेकिन वे जिस कारण सर्वाधिक ख्यातिलब्ध हुए, उसके मूल में बुन्देली भाषा में रचित उनका महाकाव्य 'ब्रजरज' है।

ब्रजरज एक ऐसा महाकाव्य है, जिसमें राधा और कृष्ण के प्रेम-प्रसंगों को सूरदास से भिन्न और बुन्देली में पहली बार रचित होते हुए देखा जा सकता है।

इससे पहले ब्रजभाषा में राधा-कृष्ण की भक्ति और प्रेमलीलाओं के वर्णन के लिए हिन्दी में रीतिकाल नाम से एक पूरा युग ही उन्हें समर्पित है। रीतिकाल में घनानंद, बिहारी, पद्माकर, आलम और बोधा जैसे महान रचनाकारों के उपरान्त बुन्देली में पुनः राधा-कृष्ण की प्रेम लीलाओं और भक्तिपरक रचना लेखन का जोखम मायूस सागरी ने उठाया है और वास्तव में उनके महाकाव्य 'ब्रजरज' में राधा-कृष्ण के प्रेम और भक्ति की छटाएँ रीतिकाल से भिन्न बुन्देली धरातल पर ताजी बयार की तरह मन में गहरे उतर जाती हैं।

इनकी हिन्दी रचनाओं में प्रमुख रूप से अद्य, लोक-मंगल, साँकेतिका, परिवेश, काव्या, हृदयाँकिता, भाव-रश्मियाँ, बोध-शिराएँ, भाव-वृक्ष, भाव-सम्पदा, आत्म-स्पंदन, बोध-स्पंदन। मुक्तछन्द- भाव-वृत्त, वाणी, सौम्या, श्रेया, कैकेयी सम्वाद, सूरज का दुख। काव्यानुवाद-चाणक्य नीति-1, चाणक्य नीति-2, विदुर नीति। कृष्णायन-अवतरण-काण्ड, मथुराकाण्ड, द्वारिकाकाण्ड, पूजाकाण्ड, गीताकाण्ड, जयकाण्ड, आरोहणकाण्ड। अन्य विधाएँ-गुरु दक्षिणा : लघु खण्ड काव्य, भाव-सुरभि : गीत, मानस की प्रीत : कविताएँ,

*अध्यक्ष- हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003

*सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, शासकीय महाविद्यालय, पथरिया, दमोह (म.प्र.)

काव्यांकर : मुक्तक, दीप्ति - रूबाइयाँ, काव्य धेनु : दोहे, वातायन : दोहे, सामवेत : विविध रचनाएँ, उजली रेखाएँ : काव्य-लेख, अनुकथन : काव्य लेख, पृष्ठभूमि : जुमले, ऊर्जा : जुमले (पत्रकारिता- अनुभव, दृष्टिकोण, विचार), आत्म-संवाद : सम्पादकीय लेख, काव्य सूत्र, दो : दोहा, सोरठा, पिंगत, इब्रत : कहानियाँ, काली आकृतियाँ : कहानियाँ, आन्य ज्वार : आदि हैं। उर्दू रचनाओं में प्रमुख रूप से 'दीनी कलाम' : यक मुश्त उजाला (नातो-हम्द), अज्मते-जिक्र (सौ बन्द की नज़्म), नग्मा ए-हश्क (सौ बन्द की नज़्म), अज्मते-तौहीद (सौ बन्द की नज़्म) आदि हैं।

मायूस सागरी की बुन्देली रचनाएँ बेहद दिलचस्प हैं। इनमें प्रमुख रूप से 'ब्रजरज' (महाकाव्य), 'मन-पीर', 'मोर-पग', 'रस' आदि बुन्देली भाषा की अनूठी कृति हैं। इनकी छिपनी एवं बतरस बुन्देली गीत बेहद मनोरम हैं, जो लोगों को सहज ही आकर्षित कर लेती हैं। इसी प्रकार 'सुदपरा' (बुन्देली विविध), 'वंश' चौपाई (तीन-तीन पंक्तियों की बुन्देली कविताएँ), 'बिजौरा'-1, बिजौरा-2, बिजौरा-3 (बुन्देली दोहे) इत्यादि रचनाएँ लोकप्रिय हैं।

मायूस सागरी ने सन् 1976 में बण्डा अजन्ता प्रेस की स्थापना की और साहित्य सेवा करते हुए आज भी वहीं निवासरत हैं। मायूस सागरी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनमें प्रमुख रूप से 1. 'दाजी सम्मान 2002', सागर, 2. नगर पत्रकार संघ गुरसराय जिला झांसी (उ.प्र.), 2002, 3. महारानी अवन्तीबाई विकास परिषद् सागर, 2004, 4. म.प्र. आँचलिक साहित्यकार परिषद्, जिला इकाई टीकमगढ़ म.प्र., 2004, 5. परिधि सम्मान सागर, 2005, 6. सौरभ साहित्य संस्थान गुरसराय झांसी, 2006, 7. अखिल भारतीय हास्य हंगामा समिति सागर, 2006, 8. राय बहादुर सिंह बुन्देला स्मृति सम्मान, वसारी छतरपुर, 2009, 9. अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद्, भोपाल तहसील इकाई पृथ्वीपुर टीकमगढ़, 2010, 10. अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड

साहित्य एवं संस्कृति परिषद् भोपाल, 2010 11. म.प्र. आँचलिक साहित्यकार परिषद् जबलपुर, 2010, कादम्बरी सम्मान जबलपुर, 2011, 12. राष्ट्र सिंकर सम्मान दिल्ली आदि हैं।

मायूस सागरी की बुन्देली रचनाओं में 'ब्रजरज' बहुत ही महत्वपूर्ण रचना हैं। नाम से तो ब्रजभाषा की रचना लगती है, लेकिन है बुन्देली में। कहा जाता है कि जिस तरह हिन्दी में रसखान ने कृष्ण की लीलाओं का मनोहारी वर्णन किया है, उसी प्रकार बुन्देली में मायूस सागरी ने बुन्देली माटी के इस कवि ने राधा और कृष्ण को मथुरा, वृंदावन और ब्रज से उठाकर स्थानीय बना दिया है। यहाँ इस महाकाव्य में राधा और कृष्ण प्रसंगों में बुन्देली भाषा और संस्कृति तथा उसका बुन्देली लोकजीवन के साथ जो एकाकार दिखाई देता है, वह कवि की मौलिक सृष्टि और प्रतिभा को रूपायत करता है।

'ब्रजरज' महाकाव्य पर अनेक विद्वानों ने अपने अभिमत प्रकट किये हैं। जिसमें हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान त्रिलोचन शास्त्री कहते हैं कि "ब्रजरज मायूस सागरी की बुन्देली भाषा की रचना है, यह भाषा उन्हें वातावरण से प्राप्त हुई और रचना में इस भाषा के शब्दों, मुहावरों के अलावा ऐसे प्रयोग भी हैं जो उनके साधिकार अध्ययन के परिचायक हैं, यद्यपि बहुवचनों का उपयोग कई जगह नदियों जैसा मिलता है। सम्भव है इसके लिए उनके पास कोई तर्क हो, पुस्तक का नाम 'ब्रजरज' होने से पहिले तो अनुमान यही होगा कि 'ब्रजरज' ब्रजभाषा में लिखी कविता होगी, लेकिन कविता बुन्देली में है।" इसी प्रकार डॉ. शिवकुमार श्रीवास्तव लिखते हैं कि "भाई मायूस सागरी शाइर हैं, कवि हैं, उर्दू, हिन्दी और बुन्देली में समान अधिकार से रचना करते हैं, सहज, स्नेही, निरभिमानी, निश्छल व्यक्ति विनम्रता के मान 'ब्रजरज' उनके द्वारा बुन्देली में गाये गये छन्दों का संकलन है, उन्हें राधा-कृष्ण और गोपिकाओं के प्रेम-प्रसंगों को आत्मीयता और तन्मयता के साथ इन छन्दों में बांधा है।"

हिन्दी साहित्य के जाने-माने साहित्यकार संस्मरण पुरोधा कान्तिकुमार जैन ने लिखा है कि “मायूससागरी किसी ज्ञानी, किसी कलाकार की तरह नहीं लिखते, सीधे सादे उस आदमी की तरह लिखते हैं, जिसे अपनी परम्परा से प्यार है, जो अपनी भावना, अपनी संवेदना दूसरों से बांटना चाहता है कोई दूब के बीज बोता नहीं है, पानी का जरा सा सहारा पाकर जैसे दूब हरिया जाती है, वैसे ही मायूस की कविता हमारे मन को हरा-भरा बना देती है।” इस प्रकार निश्चित ही यह कहा जा सकता है कि ‘ब्रजरज’ बहुत ही सरल और सुबोध भाषा में लिखा गया प्रबंध काव्य है। मायूस सागरी ने कृष्ण की परम्परा को बहुत ही मनमोहक तरीके से अपनाया है और उसका चित्रण अनूठे तरीके से किया है। आधुनिक बुन्देली में कृष्ण के चरित्र को लेकर इतना बड़ा ग्रन्थ अब तक नहीं लिखा गया है। इस सम्बन्ध में प्रो. कान्तिकुमार जैन रेखांकित करते हैं कि “कृष्ण के चरित्र पर बुन्देली में किसी कवि के द्वारा प्रस्तुत इतने सारे इकट्ठे छन्द मैंने नहीं देखे, इन छन्दों में पद हैं, सवैये हैं, दोहे हैं, गज़लें हैं और कहीं आवृत्ति नहीं हैं, बुन्देली जानने वाले के लिए कविताएं जितनी आस्वाद पूर्ण हैं बुन्देली न जानने वाले के लिए भी उतनी ही, क्योंकि इन छन्दों में बोली भावों को बांधती नहीं खोलती हैं। इन छन्दों में हमारे क्लासिकी कवियों की अनुगूँजों और वे अनुगूँजे हमारी स्मृति को सक्रिय कर देती हैं।” उक्त अभिव्यक्ति को मायूस सागरी की इस चौकड़िया में सहज ही देखा जा सकता है। जैसे -

“राधा कान्है खीव खिजावें बन्सी एंच लुकावें,
दैबे हांत बड़ावें छिनखों फिर आपइ नट जावें।
रूप इमरत पीबे के लानें जबरइं की बतियावें,
परतइ तन पै नेह फुआरें तन-मन खो सिहरावें।।”

- मायूस सागरी

‘ब्रजरज’ महाकाव्य बुन्देली भाषा में कृष्ण भक्तिकाव्य का अमूल्य रत्न है। इस महाकाव्य में प्रेम और भक्ति के साथ जीवन के सभी आयामों में नई उमंग भरता है। इस काव्य में राधा-कृष्ण की प्रेम

लीलाओं के माध्यम से प्रेम को जीवंत बनाया गया है। बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध साहित्यकार सुवचनराम का मानना है कि “‘ब्रजरज’ भावकाव्य है, इससे भक्ति अभिप्रेय है एकनिष्ठ सगुण प्रेम सम्बल है गेय पद्य है, यह कृष्ण काव्य परम्परा का मधुरिम काव्य संग्रह है। कृष्ण की लीलाओं का भावात्मक चित्रण मध्यकालीन भक्त कवियों का अभिप्रेत रहा है। लेकिन मायूस सागरी ने वर्तमान युग में राधा और गोप बालाओं के अलौकिक प्रेम को पद्यात्मक-व्यंजना का आधार बनाया है। यह प्रेम एक निष्ठ, एकान्तिक, सघन अन्तर्वर्ती, सम्पूर्ण एवं दिव्यतम है। इसीलिए इस रचना में लीलाओं का चित्रण न करके सृष्टि के शाश्वत प्रेम को भक्तिभाव का उपजीवन बनाया है श्रद्धा और प्रीति के सम्यक् परिणाम से भक्ति भाव निःसृत होता है।”⁶

प्रसिद्ध कवि अमृत आज़ाद का कहना है कि “जिस प्रकार उदारता सतत् प्रवाहमान रही है, उसी प्रकार संकीर्णता के अवरोधों का अस्तित्व भी रहा है। यह स्थिति पहले की तुलना में आज कम है, आज इन अवरोधों के कम होने के पीछे ऐसे ही निश्छल विचारकों की भूमिका रही है, जो पहिले थी और भविष्य में रहेगी। सूफी सन्तों की तरह मायूस सागरी ने भी धर्म का मूल प्रेम, दया, करुणा, त्याग, परोपकार, सत्य, विनम्रता, सदाचार और धैर्य में पाया है, आराधना पद्धतियों, रीति-रिवाजों और वेशभूषाओं की कवायद में नहीं।”

मायूस सागरी ने ‘ब्रजरज’ महाकाव्य में ब्रज का सुन्दर और मनोरम चित्रण किया है। ब्रज के ग्वाल, कृष्ण की करुणा और राधा के प्यार का अनुपम चित्रण किया है। ‘ब्रजरज’ राधा-कृष्ण की भक्ति पर केन्द्रित बीसवीं सदी की अन्तिम और इक्कीसवीं सदी की अनुपम कृति है। इसमें राधा-कृष्ण को लेकर प्रकृति और लोकप्रेम का एक दृश्य बेहद मनोरम है, जो हमें अपनी तरफ सहज ही आकर्षित कर लेता है -

“ब्रज की महिमा अपरम्पार

फूलों से खिल रथ जा डग-डग-विधिना के उपकार

ग्वालन-ग्वाल बने फिर रय सुर-लै-लै के औतार
जां कान्हा की करुण विचरै-जा राधा कौ प्यार
जां आकें ऊधौ को हो गव-छिन भर में उद्धार ।।”⁸

इस महाकाव्य की ध्वनियाँ जनमानस को दिव्य प्रेमबोध का प्रवाह भरती हैं। लोगों के हृदय में भक्ति की चेतना स्पंदित कर यथार्थ का बोध कराती हैं। समाज में पलायन यानी घर छोड़कर बाहर जाने और वहाँ जीवन यापन के लिए संघर्ष करना और बस जाना इत्यादि उपक्रम, जो हमारे समय और समाज में व्याप्त हैं, उसके बीज हमें कृष्ण के यहाँ से ही दिखाई देते हैं। इसमें व्यक्ति को घर और समाज से बिछड़ने की पीड़ा भी है और जीवन यापन की तलाश का सुख भी है। इस संदर्भ में यह कहना है कि जब कृष्ण ब्रज छोड़कर चले जाते हैं, तब गोपियों के मन में कृष्ण से बिछड़ने की व्यथा इन पंक्तियों में चित्रित है -

“तो बिन सांसे कैसे लेंय
की खों सुमरें, की खों चाहें-कीसें जौ दुख कैयं
मछरी सी आसाएं मोरीं-जल बिन कैसे रैयं
बिछरन के धंदकत तापै अब-फूल कहां लौ सैयं
तो बिन मोय लागत है अब तौ-ई देहै तज दैयं ।।”⁹

बुन्देली जानने वालों के लिए यह छंद बेहद स्वादपूर्ण है। कृष्ण के चरित्र पर बुन्देली के किसी अन्य कवि ने ऐसा महाकाव्य नहीं रचा है। बुन्देली भाषा में कितना मिठास हो सकता है, इसका प्रमाण ‘ब्रजरज’ की कविताएं हैं। इसकी मिठास गाँव में बनने वाले गुड़ की तरह है, जिसकी सोंधी महक लोगों को दूर से ही खींच लाती है। कहते हैं कि “कित्तइ मन करौ करौ, कित्तइ सादौ धीर। भासा-दृग सें बै परी, राधा की हिय पीर ।।”¹⁰

निष्कर्षतः आधुनिक बुन्देली साहित्य में मायूस सागरी का योगदान सराहनीय है। इनका यह महाकाव्य विद्यापति, सूरदास, मीरा, रसखान आदि के काव्य का आधुनिक परम्परागत साक्ष्य है। ब्रजरज रूपी इस भाव-दर्पण में प्रेम तपस्विनी राधा, योगेश्वर श्रीकृष्ण और आत्म-ज्ञानी उद्धव की अंतस छवियों को प्रतिबिम्बित करता है। निस्संदेह यह महाकाव्य कृष्ण साहित्य मर्मज्ञ और बुन्देली पाठकों के हृदय को झंकृत कर देता है। काव्य माधुर्य और सम्प्रेषणीयता की भंगिमा एवं अभिव्यक्ति पाठक को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

सन्दर्भ -

1. ‘ब्रजरज’ दृष्टिकोण, अनुकथन प्रकाशन बण्डा बेलई, सागर, मध्यप्रदेश, संस्करण- सहस्त्राब्दी संधिकाल, 1999-2000, पृ. 01
2. ‘ब्रजरज’ दृष्टिकोण, अनुकथन प्रकाशन बण्डा बेलई, सागर, मध्यप्रदेश, संस्करण- सहस्त्राब्दी संधिकाल, 1999-2000, पृ.1
3. वही, पृ. 02
4. वही, पृ. 06
5. वही, पृ. 07
6. वही, पृ. 20
7. वही, पृ. 44
8. ब्रजरज पद : एक, अनुकथन प्रकाशन बण्डा बेलई सागर, मध्यप्रदेश, संस्करण-सहस्त्राब्दी संधिकाल, 1999-2000, पृ. 01
9. वही, पृ. 11
10. वही, पृ.116

